उपसंहार

एक विचारधारा के तौर पर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम पाश्चात्य साहित्य में हुई । 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में समाज में कई परिवर्तन घटित हुए । पूँजीवादी समाज-व्यवस्था का उदय हुआ । कई नये वैज्ञानिक आविष्कार सामने आये । फोटोग्राफी और मुद्रण कला का आविष्कार हुआ । संचार के क्षेत्र में भी क्रांति आई । औद्योगीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो गई । फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था में विराट् बदलाव परिलक्षित होने लगा । इन परिवर्तनों के साथ सामाजिक और नैतिक मूल्य भी परिवर्तित होने लगे । इन सबका प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर पड़ा । जन प्रतिबद्ध कवियों ने युगीन परिप्रेक्ष्य को देखते हुए अपनी कविताओं में समकालीन वास्तविकता को उजागर करना शुरू किया । इस तरह 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में साहित्य में सामाजिक यथार्थ एक विशेष दृष्टि बनकर उभरा ।

सामाजिक यथार्थ का सामान्य आशय है – समाज की वास्तविकता को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना । किसी भी वस्तु को ज्यों का त्यों केवल फोटोग्राफी के माध्यम से उतारा जा सकता । कविता में कुछ भी ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है । कविता अनुभूतियों की गहनता से सृजित होती है । कविता में कवि की निजी संवेदना और विचार निहित रहते हैं । यही कारण है कि कवि फोटोग्राफर की तरह देखे हुए को ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं कर सकता । कविता का मूल लक्ष्य 'सर्वजन सुखाय और बहुजन हिताय' है । इसीलिए समाज

की वास्तविकता को चित्रित करते हुए कवि उसके समाज-सापेक्ष प्रभाव के प्रति सजग रहता है । अतः यही कहा जा सकता है कि सामाजिक यथार्थ समाज की वास्तविकता का समाज-सापेक्ष अंकन है । सामाजिक यथार्थ के अंतर्गत कवि समाज के बहुआयामी पक्ष को जन-सापेक्ष दृष्टि के साथ चित्रित करता है ।

सामान्य तौर पर हिन्दी कविता में सामाजिक यथार्थ अंकन भक्तिकाल से ही परिलक्षित होता है । कई भक्तिकालीन कवियों यथा सूर, तुलसी, कबीर आदि की कविताओं में समसामयिक जीवन की वास्तविकता व्यापक स्तर पर चित्रित हुई है । इन्होंने अपने समय के सच को जन सापेक्ष दृष्टि से उजागर किया है । एक विशेष जीवन-दृष्टि के तौर पर सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम प्रगतिशील कविता में हुई है । प्रगतिशील कवि पाश्चात्य विचारक गोर्की और मार्क्स के जनोन्मुखी विचारधारा से अत्यंत प्रभावित थे । समाजवादी विचारधारा के प्रभावस्वरूप कई प्रगतिशील कवियों ने समाज के वास्तविक अंकन को अपनी सृजनशीलता का आधार बनाया और कविता को समाज के उपेक्षित, अवहेलित, शोषित वर्ग के पक्ष में खड़ा किया । उन्होंने तत्कालीन समाज की विकृतियों, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और दैहिक शोषण को उजागर किया । सामाजिक यथार्थवादी कवियों ने सामान्यजन के प्रति अपने कवि-कर्म की प्रतिबद्धता को जाहिर किया और उन्हें उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित कर, नारकीय जीवन जीने को विवश करनेवाले समाज के तथाकथित प्रतिनिधियों की

भर्त्सना की । आरम्भ में अधिकांशत: आर्थिक आधार पर समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर कवियों ने लेखनी चलाई पर परवर्ती समय में भारत की आजादी के साथ समाज में कई तरह के परिवर्तन घटित हुए, उसके साथ ही समाज का बहुआयामी यथार्थ चित्रित होने लगा । भारत देश की आजादी के साथ ही शोषण, स्वार्थपरता, नैतिक अवमूल्यन को बढ़ावा मिला । लोकतंत्र की स्थापना कर, लोक के साथ जो अमानवीय व्यवहार किया गया, उससे समाज में असंतोष का विस्तार हुआ । चतुर्दिक मूल्यों का क्षरण दिखाई पड़ने लगा । सामाजिक यथार्थ को अपना साध्य मानने वाले कवियों ने निर्भीक होकर समाज-व्यवस्था की अमानवीयता को परत-दर-परत उघाड़ा और समाज से असमानता, विसंगति आदि मिटाने के लिए प्रतिबद्ध हुए ।

दुष्यंत कुमार नई कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । नई कविता में व्यक्ति प्रमुख और समाज गौण है । समाज की महत्ता वहाँ व्यक्ति के सन्दर्भ में है । व्यक्ति की वैयक्तिकता की रक्षा करते हुए समाज को स्थान दिया गया । किंतु दुष्यंत कुमार की रचनाओं से गुजरते हुए ऐसा लगता है कि वे व्यष्टि सत्य की अपेक्षा समष्टि सत्य को अधिक महत्व देते हैं । उनकी कविताओं में व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण समाज है । कवि ने अपनी सृजनशीलता को सामाजिक सरोकार से जोड़कर साम्प्रतिक समाज के यथार्थ अंकन को अपना साध्य बनाया । व्यक्तिगत कुंठा और हताशा के स्थान पर कवि ने सामान्यजन की पीड़ा, अभाव, उत्तेजना

और दबाव को चित्रित करने में अपने सृजन-कर्म की सार्थकता मानी है । उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति वृहत्तर स्तर पर हुई है । साम्प्रतिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सच्चाई दुष्यंत कुमार की लेखनी से प्रत्यक्ष हो उठी है । अपनी कविताओं में सामान्यजन की दुर्दशा, आजादी की उपयोगिता, लोकतंत्र की सार्थकता, मूल्यों के क्षरण, अभाव, बेरोजगारी, नारी-शोषण आदि को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है । उनकी कविताएँ इस बात का साक्ष्य रही हैं कि सामान्यजन की पीड़ा, अभाव और घुटन को उन्होंने शिद्दत से महसूस किया है, उनकी अंतहीन व्यथा से भीतर तक व्यथित हुए हैं । दुष्यंत कुमार का समस्त काव्य-संसार समाज की विसंगति और विद्रूपताओं को व्यापक स्तर पर उद्‌घाटित करता है । अपने आप को समाज के करोड़ों लोगों के साथ सम्बद्ध करनेवाले कवि ने अपनी कविता को सामान्यजन के पक्ष में खड़ा कर, उन्हें पीड़ा से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया है । अपनी रचनाओं में सामान्यजन के जीवन सन्दर्भ, उनके संघर्ष, उनकी आशा-आकांक्षाओं को शब्दबद्ध किया ।

किशोर जीवन से सृजन-कर्म का आरम्भ करनेवाले कवि दुष्यंत कुमार के काव्य-संसार में आरम्भ से ही समाज का वीभत्स यथार्थ वर्णित हुआ है । दुष्यंत कुमार की आरम्भिक कविताओं में अधिकतर प्रेम और सौंदर्य की कविताएँ हैं । इन कविताओं में रोमानी आवेग की तीव्रता है । उनकी आरम्भिक कविताओं के अवलोकन से यह बात सामने आई कि एक तरफ कवि जहाँ प्रेम

जीवन के आरोह–अवरोह से आन्दोलित होते हैं, वहीं दूसरी तरफ एक प्रतिबद्ध रचनाकार की तरह युगीन यथार्थ को भी पकड़ते हैं । सामाजिक यथार्थ उनकी आरम्भिक कविताओं से ही परिलक्षित होता है । जीवन के आरम्भिक काल से ही समाज के शोषक चरित्र को देखकर कवि क्षुब्ध होते हैं । उपेक्षित तथा अवहेलित सामान्यजन के प्रति उनमें गहन उत्तरदायित्व बोध दिखाई देता है । उनकी चेतना में आमजन को नारकीय पीड़ा से निजात दिलाने की चिंता समाहित है । उनकी कविताओं के समग्र अध्ययन से यही लगता है कि सृजन के आरम्भिक दौर से ही उन्होंने अपनी लेखनी को सामान्यजन के प्रति समर्पित कर दिया है । उनके तीनों काव्य–संग्रहों 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे ', और 'जलते हुए वन का वसंत' के अलावा गज़ल संग्रह 'साये में धूप' एवं कई अधूरी और असंकलित कविताओं में सामाजिक यथार्थ के विविध पहलूओं का अंकन व्यापक स्तर पर हुआ है ।

आजादी के बाद के राजनीतिक यथार्थ को उभारने में दुष्यंत कुमार की कविताएँ पूरी तरह से समर्थ हुई हैं । उनकी अधिकांश कविताएँ राजनीतिक छद्मता, राजनेताओं की चालबाजियाँ, उनके दोहरे व्यक्तित्व, भाई-भतीजावाद, स्वार्थपरता, अवसरवादिता, चुनावी पर्व की नाटकीयता, वोट बैंक के प्रति झूठी आत्मीयता और संवेदनशीलता, राजनेताओं के खोखले वादे और उनके षड्यंत्र को अनावृत्त करती हैं । देश की बागडोर सम्भालने वाले स्वार्थी नेताओं के कुत्सित

चरित्र का अनावरण कर, कवि ने सामान्यजन को उनके मूल अधिकारों के प्रति सचेत किया । संसद, संविधान और लोकतंत्र की खामियों को कवि ने वृहत्तर स्तर पर उद्घाटित किया है । 1975 में लगाये गये आपातकाल पर कवि की प्रतिक्रिया देखते ही बनती है । कवि ने जिस तरह बेलाग और बेखौफ होकर आपातकालीन तानाशाही की विसंगतियों पर लिखा, वह उन्हें पाठकों के बेहद करीब ले आया । उनके गज़ल संग्रह 'साये में धूप' में राजनीतिक यथार्थ के विविध रूप चित्रित हैं । उनकी कई गजलें आपातकालीन तानाशाही की धज्जियाँ उड़ाने के कारण बहुत प्रसिद्ध रहीं ।

दुष्यंत कुमार की कविताएँ समकालीन पूँजीवादी समाजवाद की सच्चाई को पूरी ईमानदारी से प्रकट करती है । कवि ने बेखौफ, बेलौस होकर शोषक वर्ग के चरित्र को अनावृत्त किया है । पूँजीवादी समाजवाद के घिनौने रूप को कवि ने अपनी कई कविताओं के माध्यम से दर्शाया है । पूँजीवादी समाजवाद ने समाज में एक ऐसी सभ्यता और संस्कृति को विस्तार दिया जिससे सामाजिकता हाशिये पर आ गयी, लोकतांत्रिक मूल्य परिवर्तित हो गये और समाज में 'पर' की आड़ में 'स्व' की भावना बलवती होने लगी । अपने को जनता का सेवक घोषित करने वाले तत्कालीन नेताओं ने जनता की सेवा कम और अपनी सेवा जरूरत से ज्यादा की । सामान्यजन को उसकी मूलभूत जरूरत (रोटी, कपड़ा और घर) उपलब्ध कराने के बजाये अपनी भौतिक जरूरतों को पूरा करने में व्यस्त रहें ।

योजनाएँ फाइलों में घुटती रहीं और बेबस, लाचार सामान्यजन जिन्दगी को बचाने की जद्दोजहद में दिन–रात पिसता रहा । सामान्यजन के लिए आजादी की वास्तविकता अत्यंत भयावह थी । वे विदेशी सत्ता की गुलामी से तो आजाद हो गये थे पर आजाद होते ही अपने तथाकथित कर्णधारों के गुलाम बन गये । उन्हें झूठे आश्वासनों और आशाओं से क्रमशः पेट भरने और आराम करने की सलाह दी गयी । इतना ही नहीं संसद में मुद्दों को उछाल कर जनता को दिग्भ्रमित करने का नाटक बार-बार खेला गया । आजादी उपरांत की तल्ख सच्चाई उनकी कविताओं में बेहतर ढ़ंग से चित्रित हुई है । कवि ने अपनी रचनाशीलता को निर्दयी, असंवेदनशील सल्तनत के विरुद्ध एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया और उनकी धज्जियाँ उड़ाकर रख दी ।

दुष्यंत कुमार की कविताओं में सामान्यजन की त्रासदायक अवस्था, विवशता, बेरोजगारी, अभाव सब साकार हो उठा है । उनकी गज़लों में आम आदमी की फटेहाल जिन्दगी का मार्मिक वर्णन मिलता है । संविधान में सर्वोच्च स्थान पर विराजमान आम आदमी की वास्तविकता यही है कि वह पेट को कमीज के अभाव में पैरों से ढँक रहा है और अन्न के अभाव में अपने होंठ चबा रहा है । आजादी के बाद के हिन्दुस्तान की जो तस्वीर कवि ने उकेरी है, वह लोकतांत्रिक संविधान की व्यर्थता को जाहिर करती है । जब तथाकथित रक्षकों के राज्य में आजाद हिन्दुस्तान खुद चिथड़ों में अपने अस्तित्व को बचाने को बाध्य हो रहा हो,

तब वहाँ रहनेवाले सामान्यजन की दुर्दशा को सहज ही समझा जा सकता है । लोकतांत्रिक संविधान पूँजी द्वारा परिचालित होने की वजह से अपने मूल सरोकारों से दूर हो गयी । आजाद भारत की जो तस्वीर आजादी पूर्व खींची गई, वह भारत के आजाद होने के साथ ही विकृत हो गई । उनकी कविताओं में आजाद भारत की विडम्बना का प्रत्येक पहलू दृष्टिगत है । कवि ने तीखे तेवर के साथ लोकतंत्रीय संविधान की निरर्थकता को व्यंजित किया है । 'जलते हुए वन का वसंत' की अधिकांश कविताएँ राजनीति और राजनेताओं के छदम चरित्र को अनावृत्त करती है । इस संग्रह के आमुख में कवि पाठकीय संवाद स्थापित करते हुए अपने सृजन-सरोकारों से परिचित करवाते हैं । कवि स्पष्टत: लिखते हैं कि उनके कवि की प्रतिबद्धता किसी पार्टी या संगठन के प्रति नहीं है, बल्कि उस आमजन के प्रति है, जो इस अमानवीय व्यवस्था की शिकार है और संविधान में सर्वोच्च हैसियत रखते हुए भी बेबस, लाचार और मूलभूत अधिकारों से वंचित है ।

उनकी समस्त कविताओं का अवलोकन करें तो वहाँ सामाजिक यथार्थ प्रमुख है । कवि ने प्रेम और सौंदर्य के जो चित्र खींचे हैं, वहाँ भी यथार्थ के प्रति तीव्र आग्रह लक्षित है । उनमें मनुष्य-मात्र के प्रति अगाध प्रेम है । अपने भीतर करोड़ों लोगों को महसूस करनेवाले कवि के हृदय में समाज के अवहेलित, उपेक्षित और उत्पीड़ित लोगों के प्रति अगाध स्नेह है कि वे किसी भी परिस्थिति में उनकी अवमानना सहन नहीं कर सकते । दुष्यंत निजी प्रेम के दु:ख से उतने व्यथित

नहीं दिखते जितने कि सामान्यजन की पीड़ा को, उनकी असहाय स्थिति को देखकर होते हैं । सामान्यजन के प्रति उनका प्रेम सतही नहीं है, वरन् उसमें प्रतिबद्धता और दायित्वबोध निहित है । कवि दुष्यंत कुमार को अपने देश से बहुत प्रेम था । आजादी बाद अपने देश को चिथड़े में लिपटा हुआ देखकर कवि अत्यंत व्यथित होते हैं । दुष्यंत कुमार ने अपनी कविताओं में प्रेम और सौंदर्य के जो चित्र खींचे है, उसमें काल्पनिकता और भावुकता के स्थान पर वास्तविकता ही दिखाई पड़ती है । सौंदर्याकन में उनकी दृष्टि स्त्री सौंदर्य तक ही सीमित नहीं है, वरन् उसका विस्तार प्रकृति और श्रम सौंदर्य तक हुआ है । प्रगतिशील कवि नागार्जुन की तरह उन्हें श्रम से उद्‌भूत अनाभिजात्यवादी सौंदर्य सुहाता है । उन्होंने खुद को जर्जर जनता का उद्‌घोषक कहा है । यह जर्जरता कठोर श्रम से उद्‌भूत है और समाज के विपन्न किसान-मजदूरों में विद्यमान है । उनकी कविताओं में सामान्यजन को विशिष्ट स्थान मिला है, विशेष महत्ता मिली है ।

दुष्यंत कुमार की कविताओं में प्रत्येक स्तर पर सामाजिक यथार्थ के प्रति आग्रह दृष्टिगोचर होता है । इन्होंने अपनी कविताओं में कई राजनीतिक और साहित्यिक व्यक्तित्व पर अपनी कविता रूपी श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं । नेताजी सुभाषचंद्र बोस और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भारतीय इतिहास के वे महान व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व सामान्यजन को एक बेहतर जीवन देने की लड़ाई में समर्पित कर दिया । भारत देश को अंग्रेजो से मुक्त कराना ही इनका एकमात्र

उद्देश्य नहीं था, वे सामान्यजन को अभाव, गरीबी और शोषण से भी मुक्त कराना चाहते थे । कवि दुष्यंत कुमार गाँधीजी के बिना भारतदेश के विकास को अधूरा मानते हैं । इसी तरह गोस्वामी तुलसीदास निर्विवाद रूप से हिन्दी साहित्य के ऐसे सर्जक हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में हाशिये पर पड़े हुए विपन्न, उपेक्षित और अवहेलित सामान्यजन को साहित्य में मुख्य स्थान दिया । महाप्राण निराला ने अपनी कई कविताओं में पूँजीवादी व्यवस्था से आक्रांत सामान्यजन के दर्द को स्वरबद्ध किया है । सामान्यजन के साथ इन व्यक्तित्वों का गहरा सरोकार देखकर कवि दुष्यंत इन व्यक्तित्वों के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं । उनकी कविताओं से गुजरते हुए यह बोध होता है कि वे कवि कर्म के प्रति बेहद गंभीर थे । उन्होंने पुरस्कार पाने या साहित्यिक जमात में प्रसिद्धि पाने के लिए काव्य-सर्जना नहीं की। कवि शोषणमूलक समाज व्यवस्था से खिन्न थे । सामान्यजन की दुर्दशा, उपेक्षा, अवहेलना से व्यथित थे । वे सामाजिक बदलाव की आकांक्षा में लिखते हैं । तेल से भींगी हुई बाती के जलने की उम्म्मीद में लिखते हैं । सामान्यजन के प्रति उनके हृदय में जो अगाध स्नेह, करूणा और प्रतिबद्धता व्याप्त है, वही उन्हें अभिव्यक्ति के लिए उत्प्रेरित करता है ।

दुष्यंत कुमार का शिल्प भी सामाजिक यथार्थ को दर्शाता है । कवि ने नई कविता की छद्मता, अतिशय बौद्धिकता और कलात्मक चमत्कारिता को दरकिनार करते हुए अपनी अभिव्यक्ति को सहज और संप्रेषणीय बनाया है । उन्होंने

उस शिल्प में अपने कथ्य को प्रकाशित किया, जिसे सामान्यजन सहजता से समझ सके । नई कविता अपने नवीन शिल्पगत प्रयोग और अतिशय बौद्धिकता के कारण आमजन से दूर हो गयी थी, दुष्यंत कुमार ने अपने शिल्प के माध्यम से उस दूरी को मिटा दिया । उनकी कविताओं की भाषा सहज है । वह आडंबरहीन और आमजन को समझ आने वाली भाषा है । उनकी भाषा कथ्यानुसार है । कवि जब आक्रोश व्यक्त करते हैं, तब उनकी भाषा व्यंग्यात्मक हो जाती है ।

कवि ने सामाजिक अव्यवस्था और राजनीतिक निरंकुशता का प्रतिवाद करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है । व्यंग्य सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने में सबसे अधिक समर्थ है । व्यंग्य दुष्यंत कुमार की रचनात्मक शक्ति है । व्यंग्यात्मकता की वजह से ही उनकी कविताएँ सामाजिक यथार्थ के गहरे स्तर तक पहुँच पाई है । अपने युग के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक हालातों पर कवि ने व्यंग्य के द्वारा करारा प्रहार किया है । विसंगति और विद्रूपताओं के साक्षात्कार से उपजा दुष्यंत कुमार का व्यंग्य पैना, तीखा, धारदार और चुभन पैदा करने वाला है । साथ ही साथ अपने समय के यथार्थ को निर्ममता से उघाड़ने में पूरी तरह सक्षम भी है । उनके व्यंग्य की यही विशेषता उन्हें कबीर, निराला और नागार्जुन की परम्परा का कवि बनाता है ।

दुष्यंत कुमार ने अपनी कविताओं में मिथकों का प्रयोग किया है । युग जीवन की जटिलता और आधुनिकता को अभिव्यक्त करने में मिथकों की

भूमिका अहम् रही है । मिथकों का सार्थक प्रयोग कर कवि ने अपने समय के कई ज्वलंत विषयों को उठाया है । मिथकों के प्रयोग से कवि युगीन राजनीतिक-यथार्थ को बहुत सुन्दर तरीके से उजागर करते हैं । उनका बिम्ब और प्रतीक विधान भी सामाजिक यथार्थ को दर्शाता है । अपने सृजन के अंतिम दौर में वे गीत शैली से पृथक गज़ल शैली को अपनाते हैं । रूमानियत को अभिव्यक्त करनेवाली गज़ल शैली में वे जिस स्वाभाविकता और सहजता के साथ सामाजिक यथार्थ को अभिव्यंजित करते हैं, वह उनकी कलात्मक कुशलता का परिचायक है । गज़ल शैली के माध्यम से कवि ने तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दुर्दशा का आमजन के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया है । गज़ल शैली को सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़कर कवि ने गज़ल शैली के नये और सार्थक आयाम को दर्शाया है । उनकी गज़लें सामाजिक यथार्थ को वृहत्तर स्तर पर आलोचनात्मक दृष्टि से उद्घाटित करती है । कवि ने अपने शिल्प में ऐसे बिम्ब और प्रतीकों का प्रयोग किया है, जिसके माध्यम से सामाजिक यथार्थ व्यापकता से उजागर होता है ।

दुष्यंत मानवीय चेतना सम्पन्न कवि हैं । वे नई कविता दौर के कवि होने के बावजूद अपने कतिपय समकालीन कवियों से सर्वथा भिन्न हैं । नई कविता की पहचान जैसे अनास्था, निराशा, कुंठा, वैयक्तिकता आदि उनकी कविता की पहचान नहीं है । जिस तरह उनका व्यक्तित्व आस्थावादी था, उसी तरह उनकी कविताएँ भी आस्थावादी हैं । भले ही समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक

और साहित्यिक परिवेश जन-प्रतिबद्ध कवि दुष्यंत कुमार के मनोनुकूल नहीं रहा तथापि कवि ने अपने व्यक्तित्व और साहित्य में निराशा, अनास्था और वैयक्तिकता को स्थायी स्थान नहीं दिया । वे संघर्ष को जीवन का आधार मानते हैं । संघर्ष व्यक्ति के आंतरिक शक्तियों को जागृत करता है । उसमें वर्तमान विरोधी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने का साहस जगाता है । दुष्यंत कुमार की कविताओं में वर्तमान विसंगतिपूर्ण व्यवस्था के प्रति आक्रोश और विद्रोह भी है और व्यवस्था में परिवर्तन की आशा भी ।

उनके काव्य-संसार में प्रवेश करने के पश्चात्, जैसे-जैसे उनकी कविताओं से परिचय बढ़ता गया, यह बात सामने आयी कि उन्होंने कुछ विषयों जैसे नारी जीवन की त्रासदी, बेरोजगारी आदि पर गिनती में कम कविताएँ लिखी हैं, परंतु उनका प्रभाव अक्षुण्ण है । वस्तुतः दुष्यंत कुमार की कविताओं को संख्या से नहीं आँका जा सकता । कुछेक विषयों पर कवि ने भले ही कम लिखा हो, बावजूद इसके वे यथार्थ को गहराई तक उजागर करने में समर्थ हुए हैं ।

निष्कर्षतः दुष्यंत कुमार की समग्र कविताओं का अध्ययन करने के उपरांत यही कहा जा सकता है कि दुष्यंत कुमार की कविताएँ स्वातंत्र्योत्तर समाज की सही–सही तस्वीर दिखाती हैं । उनकी कविताओं में सत्ता वर्ग की निरंकुशता, तानाशाही, चालबाजियाँ सब प्रत्यक्ष हो गई है । अपने समकालीन समाज के यथार्थ को जितनी ईमानदारी से दुष्यंत कुमार ने चित्रित किया है, वह उनके जैसे जनकवि

के लिए स्वाभाविक ही था । जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन आपातकालीन समय में हुआ, तब 'साये में धूप' लिखकर कवि ने यह जता दिया कि लोकतंत्र में अभिव्यक्ति के अधिकार को कितनी भी दबाने की कोशिश की जाए, वह दब नहीं सकती । उनकी कविताएँ सामाजिक यथार्थ को बेपर्द करने में पूरी तरह से समर्थ रही हैं । वर्तमान समाज में विसंगतियाँ खत्म नहीं हुई हैं बल्कि नित नये रूप में सामने आ रही हैं, आज भी सामान्यजन के समक्ष अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने की जद्दोजहद है । लोकतंत्र और संसद का तमाशा आज भी बदस्तूर जारी है । उपभोक्तावादी संस्कृति की गिरफ्त में हमारा समाज दिशाहीन होकर भटक रहा है । ग्रामीण जीवन की सौंधी खुशबू आधुनिकीकरण की आँधी में गुम हो गयी है । ऐसे विषमतापूर्ण समय में दुष्यंत कुमार की कविताएँ आकाशदीप बनकर राह दिखाती हैं । अपने अधिकारों को प्राप्त करने का हौंसला जगाती हैं । अन्यायी व्यवस्था के प्रति विद्रोह का बिगुल बजाने के लिए प्रेरित करती हैं । यही वजह है कि वे आज भी बेहद जनप्रिय हैं । उनकी कविताएँ आशा जगाती है कि आज न कल एक बेहतर समाज का निर्माण अवश्य होगा । समाज में जो अराजकता, अव्यवस्था विद्यमान है, वह एक न एक दिन जरूर खत्म होगा । बस जरूरत है, निरंकुश व्यवस्था के समक्ष समर्पण करने के बजाए अपने हृदय में सुलग रही विद्रोह की आग को जलाये रखने की ।